

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये नरतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये नरतितमं दशकम् ॥

আগমাদীনাং পরমতাৎপর্যনিরূপণম্

বৃকভৃগুমুনিমোহিন্যম্বরীষাদিবৃতে -

ঐষি তর হি মহত্বং সর্ষশর্ষাদিজৈত্রম্।

স্থিতমিহ পরমাত্মন্ নিষ্কলার্বাগভিন্নং

কিমপি যদরভাতং তদ্ধি রূপং তরৈর ॥ 90.1 ॥

মূর্তিত্রযেশ্বরসদাশিরপঞ্চকং যৎ

প্রাহঃ পরাত্মরপুরের সদাশিরোহস্মিন্।

তত্রেশ্বরস্তু স রিকুণ্ঠপদস্তুমের

ত্রিৎরং পুনর্ভজসি সত্যপদে ত্রিভাগে ॥ 90.2 ॥

তত্রাপি সাত্ত্বিকতনুং তর রিষ্ণুমাহ -

ধাতা তু সত্ত্বরিরলো রজসৈর পূর্ণঃ।

সত্ত্বোৎকটৎরমপি চাস্তি তমোরিকার -

চেষ্টাদিকং চ তর শঙ্করনাম্মি মূর্তৌ ॥ 90.3 ॥

তং চ ত্রিমূর্ত্যতিগতং পরপুরুষং ত্রাং

শর্ষাঅনাপি খলু সর্ষমযৎরহেতোঃ।

শংসন্ত্যপাসনরিধৌ তদপি স্ত্বতস্তু

ৎরদ্রপমিত্যতিদৃচং বহু নঃ প্রমাণম্ ॥ 90.4 ॥

শ্রীশঙ্করোহপি ভগরান্ সকলেষু তার -

ত্বামের মানযতি যো ন হি পক্ষপাতী।

ॐरनिष्ठमेर स हि नामसहस्रकादि
र्याख्ये भरंस्तुतिपरश्च गतिं गतोहन्ते ॥ 90.5 ॥

मूर्तित्रयातिगमुराच च मन्त्रशास्त्र -
स्यादौ कलायसुषमं सकलेश्वरं ॐराम्।
ध्यानं च निष्कलमसौ प्रणरे खलुकृत्वा
ॐरामेर तत्र सकलं निजगद नान्यम् ॥ 90.6 ॥

समस्तसारे च पुराणसङ्ग्रहे
रिसंशयं ॐरन्महिमेर र्ण्यते।
त्रिमूर्तियुक्त्वात्यपदत्रिभागतः
परं पदं ते कथितं न शूलिनः ॥ 90.7 ॥

यं ब्राम्हकल्प इह भागरतद्वितीय -
स्कन्दोदितं रपुरनारुतमीश धात्रे।
तस्यैर नाम हरिशर्मुखं जगद
श्रीमाधरः शिरपरोहपि पुराणसारे ॥ 90.8 ॥

ये स्वप्रकृत्यनुगुणा गिरिशं भजन्ते
तेषां फलं हि दृढैर तदीयभक्त्या।
र्यासो हि तेन कृतरानधिकारिहेतोः
स्कन्दादिकेषु तर हानिरचोर्थादैः ॥ 90.9 ॥

भूतार्थकीर्तिरनुरादरिरुद्धरादौ
त्रेधार्थरादगतयः खलु रोचनार्थाः।
स्कन्दादिकेषु बहरोहत्र रिरुद्धरादा -
स्तुतामसत्प्रभुत्पुपशिष्णाद्याः ॥ 90.10 ॥

यं किष्किदप्यरिदुषाहपि रिभो मयोक्तं
तन्मन्त्रशास्त्ररचनाद्यभिदृष्टमेर।

ब्यासोक्तिसारमयभागरतोपगीत

क्लेशान् रिधुय कुरु भक्तिभरं परात्नम् ॥ 90.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये नरतितमं दशकं समाप्तम् ॥